



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (1)  
PART II—Section 3—Sub-section (1)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 367]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 7, 1989/आषाढ़ 16, 1911

No. 367]

NEW DELHI, FRIDAY, JULY 7, 1989/ASADHA 16, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में  
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

जल-भूतल परिवहन मंत्रालय

(पत्तन पक्ष)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 7 जुलाई, 1989

सा.का.नि. 688(अ) :—महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) की धारा 132 की उप-धारा (1) के साथ पठित धारा 124 की उप धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा पारादीप पत्तन न्यास के न्यासी बोर्ड द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 123 द्वारा उन्हें प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए बनाए गए और उड़ीसा राजपत्र में दिनांक 23 दिसम्बर, 1988 और 30 दिसम्बर, 1988 को प्रकाशित और इस अधिसूचना की अनुसूची में यथा निर्दिष्ट पारादीप पत्तन न्यास (जहाज की जब्ती अथवा गिरफ्तारी और बिक्री) विनियम, 1988 का अनुमोदन करती है।

[एफ सं. पी आर 16012/9/88 पी जी]

योगेन्द्र नारायण, संयुक्त सचिव

अनुसूची

पारादीप पत्तन न्यास (डिस्ट्रेंट या अरेस्ट और

जलयानों का विक्रय) विनियम, 1988

सं. एम. डी/एस.पी.जी-1-52/87.—महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) धारा 123, धारा 53 और धारा 64 सहित पठित के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए पारादीप पत्तन की न्यासी बोर्ड निम्नलिखित विनियम बनाती है :—

1. लघु शीर्ष और प्रारम्भ :—(1) इन विनियमों को पारादीप पत्तन न्यास (डिस्ट्रेंट या अरेस्ट और जलयानों का विक्रय) विनियम, 1988 कहा जाएगा।

(2) ये सरकारी राजपत्र में केन्द्रीय सरकार के अनुमोदन की तिथि से लागू होंगे।

2. प्रयुक्ति :—महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 या—उसके अधीन बने किसी भी विनियमों या आदेशों के अंतर्गत सभी जलयानों के संबंध में देय किसी दर या जुर्माना या दोनों पर लागू होंगे।

3. परिभाषाएं :—इन विनियमों में वरना जब तक प्रसंग अन्य प्रकार से अपेक्षित हो :

(I) “अधिनियम” का अर्थ महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 (1963 का 38) ।

(II) “उप संरक्षक” का अर्थ तत्समय के लिए पारा-दीप पत्तन न्यास के समुद्री विभाग के प्रभारी हैं । उप संरक्षक के उप अधिकारी और सहायक या उस संरक्षक के प्राधिकार में कार्यरत कोई अन्य अधिकारी शामिल हैं ।

(III) “फार्म” का अर्थ इस अधिनियम के अधीन अनु-लग्नक फार्म हैं :

(IV) “दर” का अर्थ इस अधिनियम के अधीन देय दर और जुर्माना है ।

(V) इन विनियमों में प्रयोग किए गए शब्द/अभिव्यंजन । परन्तु अधिनियम में परिभाषित नहीं करने वाले या परिभाषा देने वाले शब्दों का अर्थ वही होगा जो क्रमशः अधिनियम में उल्लेख किए गए हैं ।

जलयानों की जब्ती या गिरफ्तारी : 1. यदि कोई जलयान, जिसके लिए दर/जुर्माना बिना चुकाए पड़ा हो तो उप संरक्षक फार्म I में अपराधिक जलयान के मास्टर को सभी दरों या जुर्माना के लिए मांग पत्र के जारी होने की तिथि से सात दिनों के अंदर भुगतान करने के लिए मांग करेगा ।

2. उपरोक्त मांग पत्र के साथ दरों या जुर्माना के पूर्ण विवरण सहित बिलों की प्रति संलग्न की जाएगी जो संबंधित जलयान के मालिक या एजेंट के नाम पर “रेज” किया जाएगा । जो बोर्ड को अब भी भुगतान करना है ।

3. उक्त मांग पत्र मास्टर के नाम पर भेजा जाएगा और मास्टर के उपलब्ध न होने पर डिमान्ड नोटिस के जलयान के मास्टर पर लगाया जाएगा जो कि मास्टर को दिए गए डिमान्ड के रूप में समझा जाएगा ।

4. यदि डिफाल्टिंग जलयान का मास्टर दरों/जुर्माना को या उसके किसी अंश को उसे दिए गए मांग में निर्दिष्ट समय के अंदर भुगतान करने में इन्कार करेगा या उपेक्षा करेगा तो बोर्ड ऐसे जलयान और उसके टेकल, अपरेल और फर्नीचर या उसके किसी भाग को रकम चुकाने तक रूकवा सकता है । साथ-साथ जलयान की जब्ती या गिरफ्तारी के दौरान ऐसे किसी भी अवधि के लिए बढ़ने वाले रकम को भी इस प्रकार के जलयानों से ही वसूल कर सकता है ।

5. डिफाल्टिंग जलयान के मामले में उप संरक्षक फार्म II में स्पष्ट रूप से देय रकम को निर्दिष्ट करते हुए अरेस्ट का वारंट जारी करेगा और यह भी उल्लेख करेगा कि जब्ती या गिरफ्तारी तब तक बनी रहेगी जब तक बोर्ड को देय रकम और आगे बढ़ने वाली रकम और जुर्माना और मूल्य

का भुगतान बोर्ड की पूरी तसल्ली के साथ चुकाया गया हो ।

6(क) जलयान के मास्टर को वारंट आफ अरेस्ट दिया जाएगा और उसकी एक प्रति जलयान के मास्टर पर भी लगायी जाएगी ।

(ख) यदि मास्टर उपलब्ध नहीं है या वारंट लेने में टालता है तो वारंट की प्रति जलयान के मास्ट पर लगाई जाएगी और यह माना जाएगा कि मास्टर को वारंट दे दिया गया ।

7. यदि जब्त/गिरफ्तारी या रखे गए जलयानों के जुर्माना या मूल्य जलयान के मालिक या मास्टर या एजेंट द्वारा बोर्ड की पूरी तसल्ली से जब्ती या गिरफ्तारी के बाद पांच दिनों के अंदर न चुकाया गया तो बोर्ड जब्त या गिरफ्तारी के जलयान या अन्य वस्तुओं को बेच सकता है ।

8. किसी प्रकार के आदेश द्वारा विदेशी जलयान के जब्ती या गिरफ्तारी पर, “फ्लाग कन्ट्री” के दूतावास और भारत सरकार के जल-भूतल परिवहन मंत्रालय को सूचित करना पड़ेगा ।

5. जब्त या गिरफ्तार जलयानों का विक्रय :—(1) उप संरक्षक अनुमोदित सर्वेक्षक के साथ जब्त जलयान के रिजर्व विक्रय मूल्य निर्धारण करेगा ।

(2) उप संरक्षक जलयान और उसके टेकल अपरेल और फर्नीचर को बचने के पूर्व महानिदेशक, नौवहन की अनुमति प्राप्त करेगा ।

(3) सामानों का विक्रय सामान विक्रय अधिनियम, 1930 की व्यवस्था के अनुसार और टेंडर नोटिस में निर्दिष्ट शर्तों और नियमों के आधार पर होगा ।

(4) प्रस विज्ञापन द्वारा प्रत्याशी खरीददारों से मुहरबंद टेंडरों का निमंत्रण फार्म III में किया जाएगा और इसके बारे में कम से कम चार अग्र समाचारपत्रों में हिन्दी सहित और एक अंग्रेजी भाषा सामाचार पत्र में, टेंडर प्राप्ति की अंतिम तारीख को निर्दिष्ट करते हुए, प्रकाशित करना होगा ।

(5) प्रस नोटिस के प्रकाशन के उपरांत प्रत्याशी खरीददारों को उप-संरक्षक के द्वारा, निर्धारित अवधि के अंदर जलयान की निरीक्षण के लिए अनुमति दी जाएगी ।

(6) प्रत्येक निविदा के साथ बयाना जमा बैंक ड्राफ्ट के साथ संलग्न होना चाहिए जो उप संरक्षक द्वारा निर्धारित किया जाएगा ।

(7) नियत तारीख और समय के उपरान्त प्राप्त टेंडरों को संक्षेपतः अस्वीकार कर दिया जाएगा ।

(8) उप संरक्षक द्वारा टेंडरों को खोलने की तारीख और समय निर्धारित की जाएगी और मुहरबंद टेंडर, टेंडरों

के समक्ष खोले जाएंगे। यदि कोई टेंडरर टेंडर खोलने की निर्धारित समय पर उपस्थित नहीं होगा तो उसके टेंडर को बगैर खोले और कारण न बताते हुए संक्षेपतः अस्वीकार कर दिया जाएगा।

(9) नियुक्ति प्रस्ताव की स्वीकृति की सूचना सफल टेंडरर को दी जाएगी।

(10) सफल टेंडर को प्रस्तुत रकम में से 25 प्रतिशत रकम टेंडर स्वीकृति की तारीख से पांच दिनों के अंदर चुकाना होगा और बाकी रकम को उस तारीख से 15 दिनों के अंदर चुकाना होगा। टेंडर मूल्य के अलावा टेंडरर को उप संरक्षक द्वारा निश्चित किए गए मूल्य को सुरक्षा जमा के रूप में जमा करना होगा। जो कि सफलता पूर्वक भ्रष्ट हो जाने के बाद तीन महीनों के अंदर वापस कर दिया जाएगा। लेकिन इस प्रकार के जमा पर पोर्ट सूच नहीं देगा।

(11) टेंडर स्वीकृति की तारीख के पांच दिनों के अंदर 25 की बिड-रकम न चुकायी गयी तो विक्रय करना जब तक आदेश दिया गया हो अपने आप रद्द हो जाएगा और बयाना की रकम को जप्त माना जाएगा और जिसका टेंडर स्वीकार किया गया उसके जोखिम पर जलयान को पुनः बेच दिया जायेगा।

(12) यदि किसी कारणवश 30 दिनों के अंदर जलयान को बंदरगाह से नहीं हटाया गया तो पत्तन के स्केल आफ रेड्स में निर्धारित सामान्य प्रभार के अलावा अतिरिक्त बर्थ किराया प्रभार वसूल किया जाएगा।

(13) किसी भी परिस्थिति में खरीददार बंदरगाह के अंदर या पत्तन सीमा के भीतर जलयान को विखंडन या तोड़ नहीं सकता जब तक कि या अन्यथा ऐसा करने के लिए विशेष अनुमति दी गई हो।

6. जलयान के खरीददार की दायिताएं—(1) टेंडर की स्वीकृति की तारीख से सभी दर/जुर्माना और अन्य प्रभार खरीददार के लेखे में होंगे।

2. टेंडर को स्वीकार करने पर खरीददार को पत्तन के पास 30 दिनों के लिए उक्त अवधि हेतु उप संरक्षक द्वारा अनुमानित पत्तन प्रभार शुल्क और प्रभार जमा करना होगा।

3. सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क, विक्रय कर और स्थानीय कर आदि खरीददार के लेखे में होंगे और उसे शुल्क और करों को तत्संबंधित प्राधिकारी के पास जमा करना होगा और पत्तन द्वारा जलयान निकासी मंजूरी देने के पहले ऐसे भुगतान का रसीद प्रस्तुत करना होगा।

4(क) टेंडर की स्वीकृति के उपरान्त खरीददार को प्रमाणिक मास्टर, प्रमाणिक अधिकारी और प्रमाणिक इंजीनियर से समुचित कर्मीदल सहित जलयान बंदरगाह के

अंदर रहने के दौरान उसकी देखभाल और अनुरक्षण के लिए पूर्ण प्रबंध करना होगा।

(ख) यदि खरीददार जलयान के दे बख्खाल और अनु-रक्षण के लिए आवश्यक प्रबंध करने से चुकता है तो पत्तन प्राधिकारी इस प्रयोजन के लिए समुचित व्यक्तियों को भाड़े पर व्यवस्थित करेगा और इस संबंध में हुए खर्च को खरीददार से वसूल करेगा।

#### फार्म—I

[विनियम 4/1]

सेवा में,

मास्टर एम. बी/एस. एस.

विषय :— एम बी दरों / जुर्माना दरों / जुर्माना की गैर अदावगी तत्काल भुगतान के लिये मांग नोटस का नगम।

महोदय,

कृपया मेरे पत्र की ओर देखें। आपसे अनुरोध किया गया कि तब महापत्तन न्यास अधिनियम 1963/ विनियम के प्रावधानों के अधीन या उसके अधीन बने आदेशों के अनुसार निम्नलिखित दरें पत्तन को पहले भुगतान करें।

(1)

(2)

(3)

परन्तु जलयान के मास्टर या एजेंट होने के नाते उपरोक्त मांग दरों/जुर्माना के भुगतान के लिए अभी तक कोई कदम नहीं उठाए गए।

दि. को रु. राशि आपके कमान के जलयान द्वारा देय है।

2. इसके द्वारा आपको नोटिस दिया जाता है कि इस नोटिस के प्राप्त होने के सात दिनों के अन्दर भुगतान करना होगा। ऐसा न करने पर महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 की धारा 64 के अधीन जलयान को जप्त / गिरफ्तार किया जाएगा और उसके टेकल, फर्नीचर, अपरेल अथवा उसके किसी भाग को या उन्हीं को तब तक रोक लिया जाएगा जब तक कि बोर्ड को भुगतान किया गया है और साथ में इस जलयान की जब्ती या गिरफ्तारी की अवधि के दौरान हुए आगे की रकम का भुगतान करना होगा।

भावदीय  
उप संरक्षक

प्रतिलिपि मै.

एम. बी.

प्रतिलिपि

के मालिक

जलयान के एजेंट

## फार्म II

[ विनियम 4(5) ]

सेवा में,

मास्टर,

एम. बी./एस. एस.

विषय:—नौबहन—एम. बी. दर/जुर्माना —दर  
जुर्माना की गैर अदयागी/जब्ती आदेश का निर्णय  
संदर्भ मेरे दि. समसंख्याक पत्र

महोदय,

कृपया मेरे पत्र की ओर देखें आपसे दि. को अनुरोध किया गया कि पत्तन न्यास को देय घर/जुर्माना बाबत रु. के पहले भुगतान करें। परन्तु आपके द्वारा अब तक जलयान के मास्टर या एजेंट होने के नाते पत्तन न्यास के देयों को चुकाने के लिए कोई कबम नहीं उठाए गए जैसा कि को मांग किया गया था।

आपको इसके द्वारा सूचित किया जाता है कि दि.  
को घर / जुर्माना बाबत

रु. .... की अनुमानित राशि आपके कमान के अधीन देय है।

..... बोर्ड को उपयुक्त दर/जुर्माना का भुगतान न करने के कारण में महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 की धारा 64 के प्रावधानों के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यह आदेश पारित करता हूँ कि इसके द्वारा जलयान एम बी ..... को जब्त किया गया है और उसे तब तक रोका जाएगा जहाँ तक कि बोर्ड को आगे जलयान की जब्ती और रोकने की किसी भी अवधि के दौरान होने वाली राशि का भुगतान न किया जाता।

कृपया नोट कर लें कि यदि उपयुक्त रकम और जब्ती का लागत जब्ती आदेश की (यथा) तिथि से 5 दिनों के अंदर भुगतान किया गया तो मुझे उक्त अधिनियम की धारा 64 के अधीन प्राप्त अधिकारी के जरिए उपरोक्त जलयान को बेचना पड़ेगा और विक्रय आय बोर्ड को देने वाले प्रभारों से जलयान विक्रय लागत सहित समायोजित किया जाएगा।

भावदीय

उप संरक्षक

प्रतिनिधि : मं० एम० बी० के मालिक

प्रतिलिपि : मं० जलयान के एजेंट

## फार्म—III

[विनियम 5(4) देखिए]

विज्ञापन

महापत्तन न्यास अधिनियम, 1963 की धारा 64 के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए पारादीप

पत्तन न्यास इच्छुक खरीददारों से "जैसा है उसी हालत में" के आधार पर जलयान एस बी. के विक्रय के लिए मुहरबंद निविदाएं आमंत्रित करती है।

2. जलयान के संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित हैं :—

जलयान का नाम

बनाने का वर्ष

जी. आर. टी—

एन. आर. टी.—

लम्बाई—

चौड़ाई—

गहराई—

कुल भार

वर्गीकरण —

इंजन—

बी. एच. पी.

एल. डी. टी.—

बनाने का वर्ष

यार्ड —

3. .... पत्तन न्यास के उप संरक्षक के नाम पर दोहरे सील वाले लिफाफे जो बयाना सहित

रुपए बैंक ड्राफ्ट अदायगी  
के नाम दि. .... पर  
के पूर्व आमंत्रित किया जाता है  
टेंडर फार्म के लिफाफे पर ऊपर की ओर  
एम०बी० खरीदने के लिए लिखना होगा।

4. नियम तारीख और समय के बाद प्राप्त निविदाओं को अस्वीकार कर दिया जाएगा।

5. जलयान के खरीद के लिए मुहरबंद निविदायें उप संरक्षक, पारादीप पत्तन न्यास के कार्यालय में उनकी उपस्थिति में को खोले जाएंगे। सफल टेंडर को स्वीकृति की सूचना दी जाएगी।

6. सफल टेंडर को निविदा तारीख पर 25 काबिड रकम की अदायगी करनी होगी और 25 प्रतिशत रकम स्वीकृति की तारीख से पांच दिनों के अंदर चुकाना होगा और बाकी रकम 15 दिनों के अंदर देना होगा बैंक गारंटी को स्वीकार नहीं किया जाएगा टेंडर स्वीकृति की तारीख से 5 दिनों के अंदर 25 बिड रकम यदि नहीं चुकाया तो विक्रय तब तक कि अन्यथा आदेश स्वभावतः रद्द कर दिया जाएगा और पहले जमा किए गए यथा रु. .... जम्मा कर लिया जाएगा और जिसका टेंडर स्वीकार किया गया है उस टेंडरर लागत के जोखिम पर जहाज को पुनः बेच दिया जाएगा। विक्रय विचार के शेष रकम यदि उपरोक्त समय में 15 दिनों के अंदर भुगतान नहीं किया तो विक्रय स्वभावतः रद्द हो जाएगा और जमा की गई रकम यथा रु. जम्मा कर लिया जाएगा। पहले

दिया जा चुका 25% रकम किसी प्रकार की कमी को पूरा करने या पुनः बिक्रय से उत्पन्न अन्य व्ययों को पूरा करने के लिए दिया जाएगा।

7. सीमा शुल्क, उत्पाद और आयात शुल्क बिक्री कर, स्थानीय कर आदि यथा खरीददार के लेखों में लागू होंगे।

8. टेंडरों को पारादीप पत्तन न्यास के उप संरक्षक के कार्यालय में उनके समक्ष .....को ..... बजे खोले जाएंगे और किसी भी टेंडर की स्वीकृति पारादीप न्यास के उप संरक्षक के पूर्ण इच्छा मात्र से ही होगी।

9. जहाज बिक्री हो जाने के 30 दिनों के अंदर पारादीप बंदरगाह से उसे हटा देना चाहिए। इस अवधि के दौरान प्रमाणित मास्टर, प्रमाणित अधिकारी और प्रमाणित इंजीनियरों द्वारा तथा समुचित कर्मियों द्वारा जहाज की निगरानी करनी चाहिए ये प्रबंध खरीददार को ही करना होगा।

10. खरीदार को जलयान बिक्रय की तारीख से उस जलयान को बंदरगाह से हटाने की वास्तविक तारीख तक के सभी दरों/जुमानों को महापत्तन न्यास विधिनियम 1988 (डिस्ट्रेंट या अरेस्ट और जलयान बिक्रय) के अनुसार चुकाना होगा।

11. किसी भी हालत में खरीददार को बंदरगाह के भीतर या पोर्ट सीमा के अंदर जहाज को डिसमैंटल करने की अनुमति नहीं है जब तक कि ऐसा करने के लिए विशेष रूप से अनुमति दी गई हो।

12. जहाज जो, ..... पर पड़ा है उसका निरीक्षण पूर्व नियुक्ति से उप संरक्षक द्वारा ..... से, ..... तक किया जाएगा।

13. उप संरक्षक को किसी या सभी टेंडरों को बिना किसी कारणवश अस्वीकार करने का अधिकारी प्राप्त है।

प्रसन्न कुमार मिश्र

पारादीप

अध्यक्ष

23 दिसम्बर, 1988

पारादीप पत्तन न्यास

## MINISTRY OF SURFACE TRANSPORT

(Ports Wing)

### NOTIFICATION

New Delhi, the 7th July, 1989

G.S.R. 688(E).— In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of section 124 read with sub-section (1) of section 132 of the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963), the Central Government hereby approve the Paradip Port Trust (Distrainment or Arrest and Sale of Vessels) Regulations, 1988 made by the Board of Trustees of Paradip Port in exercise of powers conferred on them by section 123 of the

said Act and published in the Orissa Gazette dated 23rd December, 1988 and 30th December, 1988 as detailed in the schedule annexed to this Notification.

[F. No. PR-16012/9/88-PG]

YOGENDRA NARAIN, Jt. Secy.

### SCHEDULE

In exercise of the powers conferred by Section 123 read with Section 53 and Section 64 of M.P.T. Act, 1963 (38 of 1963) the Board of Trustees of Paradip Port hereby makes, the following regulations namely:—

1. Short title and commencement.—(1) These regulations may be called the Paradip Port Trust (Distrainment or Arrest and Sale of Vessels) Regulations, 1988.

(2) They shall come into force on the date of publication of the approval of the Central Government in the Official Gazette.

2. Application.—These regulations shall apply to all vessels in respect of which any rates or penalties or both are payable under the Major Port Trusts Act, 1963 or under any regulations or orders made thereunder, but shall not apply to vessels belonging to, or in the service of, the Central Government or a State Government or to any vessel of war belonging to any Foreign State.

3. Definitions.—In these regulations, unless the context otherwise requires,

(i) "Act" means the Major Port Trusts Act, 1963 (38 of 1963);

(ii) "Deputy Conservator" means the Officer for the time being in charge of the Marine Department of Paradip Port Trust and includes the Deputies and Assistants to the Deputy Conservator and any other officers acting under the authority of the Deputy Conservators;

(iii) "Form" means the form annexed to these regulations;

(iv) "rates" means the rates or penalties payable under the Act.

(v) words and expressions used in these regulations but not defined and defined in the Act shall have the meanings respectively assigned to them in the Act.

4. Distrainment or Arrest of vessels.—(1) Where any vessel in respect of which rates/penalties have not been paid is lying at the Port, a demand in Form I shall be made by the Deputy Conservator upon the Master of the defaulting vessel requiring the said Master to pay all the rates or penalties within a period of seven days from the date of issue of the said demand.

(2) The said demand shall accompany the copy of the bills containing the full particulars of rates or penalties which were raised against the owner or agent of the concerned vessel and payment of which still remains due to the Board.

(3) The said demand shall be served upon the Master and in the event of non-availability of the Master, the affixing of the demand notice on the mast of the vessel shall be deemed as service of the demand upon the Master.

(4) If the Master of the defaulting vessel refuses or neglects to pay the rates/penalties or any part thereof within the time limit specified in the demand made upon the Master, the Board may proceed to distrain or arrest such vessel and the tackle, apparel and furniture belonging thereto, or any part thereof and detain the same until the amount so due to the Board, together with such further amount as may accrue for any period during which the vessel is under distrainment or arrest, is paid.

(5) In order to distrain or arrest the defaulting vessel, the Deputy Conservator shall issue a warrant of arrest in Form II clearly specifying the amount due and indicating that the distrainment or arrest shall continue until the amount so due to

the Board together with further accrual of rates or penalties and costs are paid towards full satisfaction of the Board.

(6) (a) The warrant of arrest shall be served upon the Master of the vessel and a copy thereof shall also be affixed on the mast of the vessel.

(b) In cases where the Master is not available or avoids service of the warrant, the fixing of the copy of the warrant on the mast of the vessel shall be deemed as service of the warrant upon the Master.

(7) If the said rates/penalties or cost of the distraint or arrest of the vessel or of the keeping of the same are not paid by the owner or master or agent of the vessel towards full satisfaction of the Board within a period of five days next after the distress or arrest has been made, the Board shall cause the vessel or other things so distrained or arrested to be sold.

(8) In the case of a foreign vessel placed under distraint or arrest by an order, the Embassy of the Flag Country and the Government of India in the Ministry of Surface Transport shall also be informed.

5 Sale of distrained or arrested vessel.—(1) The Deputy Conservator shall have a valuation survey of the vessel carried out by approved surveyors to ascertain the reserve sale price of the distrained vessel.

(2) The Deputy Conservator shall obtain the permission of the Director General, Shipping before putting the vessel and the tackle, apparel and furniture belonging thereto, to sale.

(3) The sale shall be held in accordance with the provision of the Sale of Goods Act, 1930 and also in terms of the conditions of sale as per Tender Notice.

(4) Sealed tenders shall be invited from the prospective buyers through press advertisement, as in Form III, at least in four leading newspapers, including Hindi and one regional language daily, specifying the last date for the receipt of tenders.

(5) The prospective buyers shall be permitted to inspect the vessel after the sale notice is published in the Press, during a specified period which shall be fixed by the Deputy Conservator.

(6) Each tender shall be accompanied by an earnest money deposit, to be paid by bank draft, to be fixed by the Deputy Conservator in each case.

(7) The tenders received after the due date and time, shall be summarily rejected.

(8) The sealed tenders shall be opened in the presence of tenderers present on the date and time fixed by the Deputy Conservator for opening the tenders and if any tenderer is not present at the time fixed for opening the tenders, his tender may be rejected without opening, giving the reasons.

(9) The acceptance of the offer shall be communicated to the successful tenderer.

(10) The successful tenderer shall pay 25 per cent of the bid amount within five days from the date of acceptance of the tender and the balance amount within 15 days from the date. In addition to the tender value the successful tenderer will also deposit such money/bank guarantee for a value as determined by the Deputy Conservator as security deposit which will be returned within a period of 3 months after successful completion. However, no interest shall be paid by the Port on the deposit so made.

(11) In default of payment of 25 per cent of the bid amount within five days from the date of acceptance of the tender, the sale shall, unless otherwise ordered, stand automatically revoked, and the earnest money shall be forfeited, and the vessel shall be resold at the risk of the tenderer whose tender was accepted.

(12) If the vessel is not removed from the harbour for any reason within 30 days, additional berth hire charges beyond the normal charges, as laid down in the Port's Scale of Rates, shall be levied.

(13) Under no circumstances, the buyer shall be permitted to dismantle or break the ship inside the harbour or within the port limits, unless or otherwise it is specifically permitted to do so.

6. Liabilities of the buyer of the Vessel.—(1) On and from the date of acceptance of the tender all rates/penalties and other charges shall be to the buyer's account.

(2) Upon acceptance of the tender, the buyer shall deposit with the port an amount representing 30 days port due, fees on charges as may be estimated by the Deputy Conservator to be payable for such period.

(3) Customs and Excise Duties, Sales Tax, Local Taxes, etc. shall be as applicable on buyer's account and he should remit the amounts on account of such duties and taxes to the concerned authorities and produce the receipts for such payments before the clearance is granted to the vessel by the Port.

(4)(a) Immediately after the acceptance of the tender the buyer shall make all arrangements for manning and maintenance of the vessel by a certificated master, certificated officers and certificated engineers with an adequate number of crew during the period the vessel is kept inside the harbour.

(b) In case of failure by the buyer in making necessary arrangements for manning and maintaining the vessel, the Port authorities may hire and employ proper persons for that purpose and all reasonable expenses incurred in this connection shall be recoverable from the buyer.

#### FORM I

[See regulation 4(1)]

To

The Master,  
M.V./S.S.

Subject :—M.V. Rates/Penalties—Non-payment of rates/Penalties Issue of Notice demanding immediate payment.

Sir,

Please refer to my letter cited. You were requested to pay a sum of Rs. .... as on ..... towards the following rates/penalties payable under the provisions of the Major Port Trusts Act, 1963/regulations or order made thereunder due to the Port Trust on or before.....  
1 ..... 2 ..... 3 .....  
No steps have so far been taken by you as the Master of the vessel, or by the Agents, to pay dues to the Port as demanded towards aforesaid rates/penalties. As on..... an amount of Rs..... is due from the vessel under your command.

2. Notice is hereby given to you for making the above payment in this seven days on receipt of this Notice, failing which provisions of section 64 of the Major Port Trusts Act, 1963 will be invoked to distrain or arrest the vessel and the tackle, apparel and furniture belonging thereto, or any part thereof, and detain the same until the amount so due to the Board, together with such further amount as may accrue for

any period during which the vessel is under distraint or arrest, is paid.

Yours faithfully,  
DEPUTY CONSERVATOR

Copy to :

M/s.

Owners of M.V.

Copy to :

M/s.

## FORM II

[See regulation 4(5)]

To

The Master,

M.V./S.S.

Subject :—Shipping—M.V. Rates/Penalties—Non-Payment of rates/Penalties—Distraint order—Issue of.

Reference :—My letter of even number dated

Sir,

Please refer to my letter cited. You were requested to pay a sum of Rs. .... as on ..... towards the Rates/Penalties due to the ..... Port Trust on or before ..... No steps have so far been taken by you as master of the vessel or by the agents to pay the dues to the ..... Port Trust as demanded on ..... You are hereby notified that an approximate amount of Rs. .... towards rates/penalties as on ..... is due from the vessel under your command.

In view of the non-payment of the above rates/penalties due to the ..... Board, I hereby pass orders in exercise of the powers given under the provisions of section 64 of the Major Port Trusts Act, 1963, that the vessel M.V. .... is hereby distrained and will be kept under detention until the amount due to the ..... Board together with such further amount as may accrue for any period during which the vessel is distrained and detained is paid.

Please also note that in case the above said amount and the cost of the distraint is not settled within 5 days from the date of distraint order (i.e.) ..... I shall be constrained to sell the above vessel under the powers vested under section 64 of the said Act and the sale proceeds will be adjusted against the charges due to the Board including the cost of the sale of the Vessel.

Yours faithfully,  
DEPUTY CONSERVATOR

Copy to :—

M/s.

Owners of M.V.

## FORM III

[See regulation 5(4)]

## ADVERTISEMENT

In exercise of the powers conferred by section 64 of the Major Port Trusts Act, 1963 Paradip Port Trust invite sealed tenders from the intended purchaser. For the sale of the vessel M.V. .... On "as is where is" basis.

2. Brief particulars of the vessel are as follows :—

Name of the vessel	.....
Year of Built	.....
G.R.T.	.....
N.R.T.	.....
Length	.....
Breadth	.....
Depth	.....
Deadweight	.....
Classification	.....
Engine	.....
B.H.P.	.....
L.D.T.	.....
Year of Built	.....
Yard	.....

3. Offers in double sealed covers are invited before ..... Rs. on ..... addressed to the Deputy Conservator, ..... Port Trust along with an Earnest Money Deposit of Rs. .... (Rupees ..... by Bank draft payable at ..... in favour of ..... The tender should be submitted superscribing on the envelop Tender for the Purchase of M.V. ....

4. All tenders received after the due date and time will be summarily rejected.

5. The sealed tenders for the purchase of the vessel shall be opened on ..... in the presence of Deputy Conservator Paradip Port Trust in his office. The acceptance of the offer will be communicated to the successful tenderer.

6. The successful tenderer shall pay 25 per cent of the bid amount within five days from the date of acceptance of the tender and the balance within 15 days from that date. No Bank Guarantee will be accepted. In default of payment of 25 per cent of the bid amount within five days from the date of acceptance of the tender, the sale shall unless otherwise ordered, stand automatically revoked and the Earnest Money Deposit of Rs. .... forfeited and the ship resold at the risk of cost of the tenderer, whose tender was accepted. Should the balance of sale consideration be not paid within the aforesaid time of 15 days from the acceptance of the tender, the sale shall stand automatically revoked and the earnest money of Rs. .... be forfeited. The 25 per cent amount already paid shall be retained to meet any shortfall or other expenses arising out of the said resale.

7. Custom, Excise, and Import Duty, Sales Tax, Local Taxes, etc. as applicable on 'BUYERS ACCOUNT'.

8. The tenders will be opened on ..... at ..... in the presence of the Deputy Conservator, Paradip Port Trust in his office and the acceptance of any tender will be at the sole discretion of the Deputy Conservator, Paradip Port Trust.

9. The ship should be removed from the Paradip Port within 30 days from the date of sale. During this time the ship should be kept manned by certificated Master, certificated officers and certificated Engineers plus an adequate number of crew. These arrangements should be made by the Buyer.

10. The Buyer will have to pay all the rate/penalties from the date of sale of the vessel till the date of actual removal of the vessel from the harbour in accordance with the Major Port Trust (Distraint or Arrest and sale of vessels) Regulations, 1988.

11. Under no circumstances, the Buyer will be permitted to dismantle the ship inside the harbour or within Port limits, unless or otherwise it is permitted to do so.

12. The ship which is lying at ..... may be inspected by prior appointment with the Deputy Conservator, from ..... to .....

13. The Port reserves the right to reject any or all the tenders without assigning any reason whatsoever.

PARADIP PORT TRUST.

